3. लखमीचंद कृत 'नल दमयन्ती' सांग की कथावस्तु का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'नल-दमयन्ती' सांग के आधार पर दमयन्ती की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (10)

4. मिंखारी ठाकुर कृत 'बिदेसिया' की संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बिदेसिया' के प्रमुख पात्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (10)

5. 'राजयोगी भरथरी' माच के नाट्य-शिल्प का विवेचन कीजिए।

अथवा

'राजयोगी भरथरी' माच के आधार पर राजा भरथरी का चरित्र-चित्रण कीजिए। (10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

03.06.24(M)

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1519 **H**

Maitreyi College LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi-110021

Unique Paper Code : 1205607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (DSE) (CORE)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) परदेसी का सोचे मरलीं।
अन-पानी के स्वाद रुचत नइखें, कबहूँ पेट ना भरलीं।
मतलब मोर बिधाता जनिहन, प्रेम का फंदा में परलीं।
छठ, एतवार एको न छोड़लीं, बरत से काया के जरलीं।
कहत 'भिखारी' उपाय नइखे लउकत, कोटिन जतन क के हरलीं।

अथवा

पिया मोर, मति जा हो पुरुबवा ।
पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर । पिया मोर...
सुनत बानी आँख पानी देत बा, सारी भइल सरबोर । पिया मोर...
एक नाथ बिनु मन अनाथ रही, घुसी महल में चोर । पिया मोर...
कहत बिखारी हमारी ओर देख, कतिना करीं निहोर? पिया मोर...

(ख) रंग भर जाजम झटक बीछावां, चारी पल्ला खोल ।।टेक।।
सिद्धेश्वर हे सरण-चरण में, लिखे माच का बोल ।
ग्यान की गादी ओर गलीचा, तकीया गोल मटोल ।
तन का ताना मन का बाना, स्वांसा तार टटोल ।
बृहम्म नाम की जाजम बूणी रंगी धरम रंग घोल ।
मन पंछी जां बास करे हे, करके बचन ओर कोल ।
इन जाजम पे बीरला बेठे, ग्यान तराजू तोल ।।

अथवा

भरतरी -
अरे पिंगला थारो सुन्दर रूप सरूप नैन भर निरखांवो ।।टेक।।
थारो मुख सूरज सो तेज, रंग केसर का वो
थारो रूप देख सरमाय चाँद अम्बर का वो ।
पिंगला -
अजी पीतम तम हो सरद पुनम का चाँद में हां चाँदनी ।।टेक।।
तम जेसे गजराज, में हां गज गामनी
तम म्हारा भरतार, पियु मैं थाकी कामनी ।

(ग) इस बणखण्ड में दीखै सै मनैं दिन मैं घोर अन्धेरा ।
सारदूल के जंगल के राजा कितै पति मिल्या हो मेरा ।
तेरे बिना ना मेरी दहशत भागै, पिया मेरे इस मौकै मत त्यागै ।
मनैं पिता के घरपै देवत्यां आगे पल्ला पकड्या तेरा ।
इस जीवते जी क्यूंकर भूलूँ जब उनकै आगै टैरा ।।।।।

अथवा

समझ ना सकते जगत के मन पै अज्ञान रूपी मल होग्या ।
बेईमान मैं मग्न रहै सैं गांठ-गांठ मैं छल होग्या ।।टेक।।
भाई के धोरै मा जाया भाई चाहता बैठणा पास नहीं ।।
जै बीर न पति कमा कै ल्यादे तै पेट भरण की आस नहीं ।।
मात-पिता गुरु-शिष्य सुत नै कहैं मेरे चरण का दास नहीं ।।
मित्र बण कै दगा कमाज्यां नौकर का विश्वास नहीं ।।
जब तै गारत महाभारत में अठारा अक्षौहिणी दल होग्या ।।।।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य 'नौटंकी' के उद्‌भव और विकास को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'अंकिया' लोकनाट्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परंपरा का उल्लेख कीजिए। (15)